BJS
Bharatiya Jain Sanghatana

# भारतीय जैन संघटना समाचार

जून 2016
वर्ष 1 अंक 6

श्री शांतीलाल मुथ्था
संस्थापक

## प्राकृतिक आपदाओं में सामाजिक उत्तरदायित्वों के प्रति सजग भारतीय जैन संघटना

रूठी कुदरत पडा अकाल, सूख गयी नदिया बूँद बूँद को मोहताज इंसान,
प्यासे खेत बेबस खलिहान, प्रकृति से खिलवाड का यह करुण अंजाम

राष्ट्रीय अध्यक्ष की कलम से....2

मंथन: प्राकृतिक आपदाएं,
ग्लोबल वॉर्मिंग
एवं रोकथाम.....3

आपदा प्रबंधन में
भारतीय जैन संघटना.....4

बीजेएस गतिविधियाँ.....5

प्रतिभाएँ-
जो हमारी प्रेरणास्त्रोत हैं.....6

अल्पसंख्यक सूचनाएँ,
जानकारी एवं समाचार.....7

# राष्ट्रीय अध्यक्ष की कलम से





प्रिय स्वजन,

इस वर्ष सूखे व अकाल की भीषणता अधिकांश आँखों में आंसुओं का निमित्त बनी हैं. शहरों में गंभीर जल संकट का अनुभव हम कर रहे हैं. अंतराल ग्रामीण क्षेत्रों में स्थिति अत्यंत ही भयावह है, अतएव अनेक संगठन सहायता हेतु आगे भी आए हैं. ऐसी आपदाओं के दौरान, विषम परिस्थितियों में भी, भारतीय जैन संघटना द्वारा पूर्व में दी गई सेवाओं के फलस्वरूप हमें इस वर्ष भी इस विकट घड़ी में सहायता करने हेतु प्रार्थना की गई. हमने सर्वाधिक सूखाग्रस्त मराठवाडा के बीड, लातूर एवं उस्मानाबाद जिल्हों के ग्रामीण क्षेत्रों में जल वितरण के साथ नदियों एवं नालों को गहरा करने का कार्य हाथ में लिया है ताकि जल संग्रहण क्षमता में वृद्धि हो सके.



प्राकृतिक आपदाएँ जैसे - सूखा, अकाल, भूकंप, बाढ़ आदि घटनाओं की दर वर्ष दर वर्ष बढ़ रही है जिससे हम या हमारा देश ही नहीं अपितु समस्त विश्व दुष्प्रभावित है. हम सभी ने गत कुछ वर्षों में यह भी अनुभव किया है कि प्राकृतिक आपदाओं की संख्या के साथ - साथ उनकी भीषणता भी बढ़ रही है, फलस्वरूप अब पहले से अधिक जनहानियों में उतरोत्तर वृद्धि हो रही है. इस अंक के माध्यम से हम ग्लोबल वोर्मिंग व प्राकृतिक आपदाओं विषय पर गहन चर्चा से पर्यावरण के प्रति हमारें व्यक्तिगत एवं सामूहिक कर्तव्यों के प्रति सजगताओं के महत्वपूर्ण संदेश आप तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं.

मित्रों! वैश्विक पर्यावरण की स्थिति वर्ष दर वर्ष बदतर होती जा रही है, इस वास्तविकता से हम सभी भली- भांति परिचित भी हैं. अविरत बिगड़ता जा रहा व अनियंत्रित हो रहा वैश्विक पर्यावरण 21वीं सदी की ज्वलंत समस्या है. 30 मई, 16 को ही उत्तरप्रदेश में मौसम की प्रथम वर्षा ने रोद्ररूप धारण किया जिसमें भारी जनहानि हुई भी हुई है. अनावृष्टि व अतिवृष्टि होना अब अति सामान्य-सा हो गया है. बढ़ता प्रदूषण, वनों का सफाया व अनियोजित शहरीकरण, ऐसे अनेक मुद्दे हैं जिनसे ग्लोबल वोर्मिंग यानि वैश्विक तापमान में वृद्धि हो रही है. हाल ही में किए गए एक अध्ययन के अनुसार जरूरत व ऐशोआराम के साधनों से 3 डिग्री तापमान सामान्यतः बढ़ा है जिसका अनुभव हम सभी ने गत दो माह में किया ही है. वैश्विक तापमान में अविरत वृद्धि मानव सर्जित है क्योंकि पर्यावरण का संतुलन बनाए रखना, हमारे कर्तव्यों की सूची में सम्मिलित ही नहीं है.

मेरी आपसे विनम्र प्रार्थना है कि अब समय आ गया है कि हम हमारी जीवन शैली, आदतों व व्यवसाय आदि से पर्यावरण को हो रही क्षति के प्रति सजग हों. निजी स्वार्थों को परे रख कर व्यक्तिगत स्तर पर हमारें द्वारा ऐसा कोई कृत्य जो पर्यावरण को प्रदूषित करता हो, न करने का संकल्प लें. भगवान महावीर ने समस्त विश्व को अहिंसा का मंत्र दिया. महावीर की अहिंसा मात्र जीवों के प्रति करुणा दर्शाने तक सीमित न होकर समस्त सृष्टि व पर्यावरण की रक्षा को समाहित करती है. यदि हम सृष्टि के समस्त जीवों व वनस्पतियों के प्रति सजग होंगे तभी स्थिति नियंत्रण में आएगी जिससे पृथ्वी की सुरक्षा ही नहीं अपितु मानव अस्तित्व पर लग रहे प्रश्न चिन्ह भी संभवतः हट सकेंगे.

भारतीय जैन संघटना स्थापना काल से ही उसके समर्पित एवं अनुभवी कार्यकर्ताओं रूपी सैन्य के बल पर प्राकृतिक आपदाओं के समय राहत व बचाव कार्यों में सदैव से ही अग्रिम पंक्ति में रहा है. भारतीय जैन संघटना देश में किसी भी कौने में घटित प्राकृतिक आपदाओं में त्वरित गति से दुर्घटना स्थल पर पहुँच कर राहत व बचाव कार्यों में श्रेष्ठ प्रबंधन तौर तरीके अपनाता है. हम देशभर में राज्यों के प्रत्येक जिल्हे से कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित कर 100 प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं की राष्ट्रीय आपदा राहत इकाई का गठन करने हेतु कृत-संकल्पित हैं. इस विषय में आपके सुझावों का स्वागत करेंगे क्योंकि हम आपदा पीड़ितों की सहायता बेहतर तरीकों व तकनीकी प्रयोग से करना चाहते हैं.

इस अंक में भारतीय जैन संघटना के संस्थापक आदरणीय शांतीलालजी मुथ्था का आपसे परिचय करवा रहे हैं, जिनकी प्राकृतिक आपदाओं संबंधी वैचारिकी व कार्यशैली सदैव ही अनुकरणीय रही है. साथ ही एक ऐसी युवा प्रतिभा श्री मोहम्मद युनूस, चेन्नई से आपका परिचय करवा रहे हैं जिसने स्वयं के प्रयासों से नवंबर, 2015 में आई बाढ़ में 2100 व्यक्तियों के जीवन को सुरक्षा व आश्रय प्रदान किया.

***यह सूचित करते हुए अत्यंत ही हर्षित हूँ कि अब से भारतीय जैन संघटना समाचार के इस अंक व* आगामी प्रत्येक अंक देश के 20,000 परिवारों को प्रेषित करेंगे. मुझे विश्वास है कि सामाजिक सहभागिता पर इस अंक में प्रकाशित लेख व विचारों को हम सभी आत्मसात करते हुए 'Jains for India' की अवधारणा को सिद्ध करने हेतु प्रयासरत रहेंगे.**

**प्रफुल्ल पारख**

राष्ट्रीय अध्यक्ष, भारतीय जैन संघटना

**संपादक**
प्रफुल्ल पारख, पुणे

**कार्यकारी संपादक**
निरंजन कुमार जुवाँ जैन, अहमदाबाद

**सदस्य**
कैलाशमल दुगड़, चैन्नई   सुरेश कोठारी, अहमदाबाद   सुदर्शन जैन, बड़नेरा,   वीरेंद्र जैन, इंदौर
महेश कोठारी, गोंदिया,   संजय सिंघी, रायपुर,   राजेंद्र लुंकड़, इरोड़

# आपदा प्रबंधन में भारतीय जैन संघटना

वैश्विक अध्ययनों एवं सर्वेक्षणों के अनुसार किसी एक प्राकृतिक दुर्घटना में यदि 10 व्यक्ति मारे जाते हैं तो कम से कम 100 व्यक्ति घायल अवश्य ही होते हैं. प्रकृति के समक्ष मनुष्य आदिकाल से ही लाचार रहा है, क्योंकि 21वीं सदी के तकनीकी अन्वेषणों के उपरांत भी प्राकृतिक विपत्तियों को भापने या मापने में वह असफल ही रहा है. साथ ही दुर्घटनाओं के पश्चात की स्थितियां अत्यंत ही भीषण होती हैं क्योंकि आपदाग्रस्तों के समक्ष बीमारी, भोजन, जल व आश्रय जैसी त्रासदियों के साथ परिवारजन को खो देने की मानसिक आघातजन्यता, संभवतः प्रकृति के रौद्ररूप की परिणति ही मानी जा सकती है.

आपदा प्रबंधन में राहत सामग्री पहुँचाने एवं बचाव कार्य तो भारतीय जैन संघटना करता ही है किन्तु पीड़ितों के स्थायी पुनर्वसन एवं विशेषकर बच्चों को सामजिक सुरक्षा प्रदान करना उसकी विशिष्टताओं में है. गत कुछ दशकों से भारतीय जैन संघटना देश में हुई भीषण आपदाओं में पीड़ितों के बच्चों के पालन पोषण एवं शैक्षणिक पुनर्वसन का उत्तरदायित्व बखूबी व तत्परता से निभा रहा है.

भारतीय जैन संघटना आपदाओं की चुनौतियों का सामना करने में व पीड़ितों के स्थाई सामाजिक पुनर्वसन हेतु पद्धतिबद्ध तरीके से कार्य करता है. उसकी कार्यशैली के मुख्य तीन आधारों में (1) आवश्यक योजना निर्माण के त्वरित निर्णयों में उसकी अनुकरणीय नेतृत्व क्षमता (2) पूरे देश में फैले हुए अनुभवी कार्यकर्ता जो अल्प समय मे आपदा स्थल पर पहुँच जाते है एवं (3) वाघोली, पुणे स्थित शैक्षणिक पुनर्वसन केंद्र जो सेना की तरह कार्यशैली व तत्परता के समान पुनर्वसन कार्यों को अंजाम देता है. इसके अतिरिक्त भारतीय जैन संघटना ऐसे समय मे सरकारी तंत्र के साथ कार्य करने व उन सरकारी उत्तरदायित्वों के वहन को प्राथमिकता देता है जहां सरकार व अन्य संस्थाएं प्राथमिकताओं, व्यस्तताओं व दबावों के कारण वहाँ तक नहीं पहुँच पाती.

शिक्षा एक ऐसा क्षेत्र है जो प्रकृतिक आपदाओं मे व्यापक तौर पर प्रभावित होता है. आपदा प्रभावितों के बच्चों व युवाओं के कुछ शैक्षणिक वर्षों के नुकसान की संभावना तो रहती ही है, साथ ही वे अनेक सामाजिक व अन्य समस्याओं से घिर जाते हैं. आश्रयस्थल, राहत सामाग्री, दवाइयाँ एवं भोजन आदि की व्यवस्थाएँ बनाना सरकार व अन्य गैर-सरकारी संगठनो की प्राथमिकता मे होते हैं व सामान्य तौर पर देश में ऐसी आपदाओं में बच्चों व युवाओं पर अलग से लक्ष्य करने की संकल्पना मात्र सरकारी फ़ाईलो में सिमट कर रह जाती है.

भारतीय जैन संघटना उसके स्थापना काल से ही आपदा पीड़ित परिवारों के बच्चों के शैक्षणिक पुनर्वसन व ग्रेजुएशन तक मुफ्त शिक्षा प्रदान कर उन्हें उनके पेरों पर ही खड़ा नहीं करता अपितु वे समाज मे योग्य स्थान पाये, इस हेतु लक्ष्य करता है. शैक्षणिक पुनर्वसन में भारतीय जैन संघटना दो दिशाओं में कार्यरत है (1) आपदाग्रस्त क्षेत्र में विद्यालय भवनों का निर्माण व (2) भारतीय जैन संघटना के वाघोली, पुणे स्थित शैक्षणिक पुनर्वसन केंद्र में लाकर उनका पालन पोषण करना.

**आपदाओं में किए गए कार्यों का विवरण :**

- **1993:** लातूर (महाराष्ट्र) भूकंप 1200 लड़कों का शैक्षणिक पुनर्वसन
- **1977:** मेलाघाट कुपोषण 350 लड़कों का शैक्षणिक पुनर्वसन 10 वर्षों हेतु
- **1977:** जबलपुर भूकंप 50 लड़कों का शैक्षणिक पुनर्वसन
- **2001:** गुजरात (कच्छ-भुज) भूकंप90 दिनों में 368 अस्थायी विद्यालय भवन का निर्माण
- **2002:** अकोला (महाराष्ट्र) बाढ़ 15000 बाढ़ पीड़ितों को अस्थायी आश्रय स्थल
- **2004:** त्सुनामी- स्वास्थ्य एवं शिक्षण केंद्र निर्माण – 34 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र व 11 विध्यालयों का एक वर्ष में अंडमान एवं निकोबार में निर्माण
- **2005:** जम्मू एवं काश्मीर भूकंप 870 प्री-फेब्रिकेटेड आश्रय 15000 पीड़ितों हेतु
- **2005-06:** महाराष्ट्र बाढ़ 5000 राहत सामग्री के किट का वितरण
- **2008 :** बिहार बाढ़ 1.50 लाख बाढ़ पीड़ितों को स्वास्थ्य सहायता 181 दिनों तक
- **2013 :** महाराष्ट्र सूखा एवं अकाल बीड़ जिल्हा के 115 तालाबों को मात्र 1 माह की अवधि में गहरा किया गया.10000 पशुओं हेतु 28 केंप 7 जिल्हों में स्थापना व प्रबंध.
- **2015 :** नेपाल भूकंप भोजन एवं घरेलू सामाग्री किट का वितरण.
- **2015 :** महाराष्ट्र के मराठवाडा के सभी जिल्हों तथा यवतमाल से २७७ बच्चों (लडके-लडकियों) का चयन कर उन्हें शिक्षण हेतु वाघोली शैक्षणिक पुनर्वसन केंद्र, पुणे लाया गया. आगामी शैक्षणिक वर्ष 2016-17 हेतु पूरे महाराष्ट्र में सूखे से प्रभावित जिलों में आत्महत्याग्रस्त पीड़ित परिवारों के बच्चो को शिक्षण पुनर्वसन हेतु वाघोली शैक्षणिक पुनर्वसन केंद्र, पुणे लाया जा रहा है.
- **2016-17 :** भारतीय जैन संघटना द्वारा सूखे से सर्वाधिक प्रभावित जिल्हों बीड, लातूर एवं उस्मानाबाद में टैंकरों से पानी का वितरण किया जा रहा हैं. भविष्य को ध्यान में रखते हुए इन जिलों में नदी-नालों का गहरीकरण एवं चौड़ीकरण का कार्य भी किया जा रहा है.

विभिन्न स्थलों पर स्वास्थ्य केन्द्रों द्वारा सहायता व बचाव कार्य त्वरित आपदा प्रबंधन हेतु प्रख्यात भारतीय जैन संघटना को नेशनल डिसास्टर मेनेजमेंट ने 2005 में समझौता ज्ञापन हेतु आमंत्रित किया. ऐसे समझौते पर हस्ताक्षर करने वाली देश की प्रथम संस्था बनाने का गौरव प्राप्त किया. आपदाओं में भारतीय जैन संघटना द्वारा की जा रही सेवाओं का उल्लेख लोकसभा में हुआ. इसके अतिरिक्त IIM रायपुर एवं NDMA द्वारा मानवीय सेवाओं व विशेषकर आपदा प्रबंधन हेतु ICHL अवार्ड 2013 में दिया गया.

आपसे प्रार्थना है कि किसी सुविधाजनक दिन "मानव मंदिर" की प्रतिकृति समान वाघोली पुणे स्थित शैक्षणिक पुनर्वसन केंद्र का भ्रमण करें व उन विद्यार्थीयों को आशीर्वाद प्रदान करें जो अब आपदा के आघातों को पीछे छोडते हुए, कल के निर्माण में लगे हैं.

मंथन

# प्राकृतिक आपदाएं, ग्लोबल वॉर्मिंग एवं रोकथाम : मंथन के नज़रिये से

22 अप्रेल,16 का दिन इतिहास के पन्नों मे रेखांकित हुआ क्योकि विश्व के 175 देशों ने 'पेरिस क्लाइमेट समझौते' पर हस्ताक्षर किए. वस्तुतः 196 देशों में से 89% ने प्रदूषण से बढ़ रही कार्बन की मात्रा व वैश्विक तापमान को नियंत्रण में लाने के अभियान पर तत्परता दिखाई है. सम्पूर्ण विश्व अत्यंत ही खतरनाक स्थितियों की तरफ बढ़ रहा है क्योंकि NASA द्वारा किए गए अध्ययनों से ज्ञात होता है कि पर्यावरण में 403.28 ppm (parts per million) विद्यमान है जो घट रही ऑक्सीज़न की मात्रा को इंगित करता है. यदि हम अब भी नहीं जागे, तो वह दिन दूर नहीं जब श्वास लेने हेतु पर्याप्त ऑक्सीज़न ही हमें न मिले.

पृथ्वी पर बढ़ रहे तापमान पर एक नज़र डालें तो वर्ष 2001 में वैश्विक तापमान 0.54 डिग्री सेलशियस था जो वर्ष 2015 तक भयावह ढंग से बढ़कर 0.87 डिग्री सेलशियस तक पहुँच चुका है. यह हम सभी की चिंता का विषय होना चाहिए. बढ़ते हुए तापमान का क्या प्राकृतिक आपदाओं से सीधा संबंध है? यह एक वास्तविकता है कि मानव रचित कारणों से प्राकृतिक आपदाओं की दर विश्व में बढ़ रही है चाहे वो किसी भी आकार में हो जैसे कि भूकंप, बाढ़, तूफान, त्सुनामी, सूखा या अकाल आदि. EM-DAT की रिपोर्ट में विश्व में वर्ष 1970 में जहां 78 प्राकृतिक आपदाएँ घटित हुई वहीं वर्ष 2004 में यह संख्या बढ़कर 348 हो गई.

मानव लापरवाहियों के कारण वैश्विक तापमान में वृद्धि से मानव जीवन एवं विभिन्न जीवों का अस्तित्व भी दाव पर लग चुका है. यहाँ कुछ उदाहरहण बढ़ते वैश्विक तापमान के दुष्परिणामों को समझने में महत्वपूर्ण होंगे :

- प्लास्टिक का कचरा व मोटर गाड़ियों के पुर्जे खाने के कारण दो व्हेल मछलियाँ 29 जनवरी, 16 को उत्तरी सागर के किनारे पर मृत पायी गई. इसी तरह गाय, हाथी, पक्षियों आदि की मृत्यु हमारे द्वारा फेके गए कचरे के कारण हो रही है. यहाँ तक कुछ पक्षियों का विलुप्त होना जारी है. प्लास्टिक के बढ़ता पुनर्चक्रण (Recycling) समस्या को गंभीर बना रहा है. यह हमारा उत्तरदायित्व है कि प्लास्टिक सामाग्री का प्रयोग कम करें व पर्यावरणीय मित्र (Eco-friendly) सामग्री जैसे कागज व कपड़ा आदि का उपयोग दैनिक जीवन में बढ़ाएं.
- देश का आधे से अधिक भाग सामान्यतः वर्षा व पानी की कमी से प्रभावित रहता है. जो सूखा-अकाल जैसी स्थितियों का कारण है. वैज्ञानिक अनुसन्धानों से यह तथ्य स्पष्ट हुआ है कि जलवायु परिवर्तन व प्राकृतिक आपदाओं को गंभीरता से लिया ही नहीं गया. हम इस वास्तविकता से परिचित हैं कि सूखे व अकाल के कारण देश में किसान आत्महत्या कर रहा है. समस्या विकट होती जा रही है क्योंकि हम "योग्य विकास" रूपी शब्दों के नकाब पहनने के आदि हो चुके हैं. जल व बिजली को हम बचा सके तो निश्चित ही स्थितियों में परिवर्तन होगा.
- शहरीकरण अपरिहार्य है अतएव शहरों का विकास हो रहा है किन्तु वनों के विनाश, पर्वतों का अतिक्रमण व जल संग्रहण के दुरुपयोग की कीमत पर यह नहीं होना चाहिए. अनियोजित व अविचारित ढांचागत योजनाएँ व सड़कों पर वाहनों की बढ़ती संख्या पर्यावरण में कार्बन की मात्रा मे वृद्धि कर रही है.

विश्व में पृथ्वी दिवस से लेकर पर्यावरण दिवस को उत्सवित करने की परंपरा है, किन्तु हम इतने पाखंडी बन चुके हैं कि ऐसे दिवसों का उत्सव वातानुकूलित सभागृहों या कमरों में बैठकर करते हैं. स्वयं हम ही बढ़ते वैश्विक तापमान हेतु उत्तरदायी हैं. मनुष्य सभी प्राणियों में सर्वाधिक रूप से सभ्य व बुद्धिशाली है किन्तु 21वीं सदी की मनुष्य जाति के लिए संभवतः यह कलंक का विषय है. प्रकृति के साथ हो रहे खिलवाड़ के विरुद्ध हमारी सोच व आचरण में परिवर्तन लाएँ व निष्ठा तथा ईमानदारी से प्रकृति के प्रति उत्तरदायी हों ताकि पृथ्वी तथा जीवन को बचाया जा सके.

# बीजेएस गतविधियाँ

## मराठवाड़ा के सूखाग्रस्त क्षेत्रों मे भारतीय जैन संघटना का राहत एवं सहायता कार्य

वर्ष 2015 के शीतऋतु के समय ही मराठवाडा के डैमों, तालाबों आदि में मात्र 5% जल शैष बचा था. लगातार दो वर्षों से वर्षा हुई ही नहीं व घट (-)42% के आसपास रही है. फसलों की हानि से आर्थिक बोझों के तले दबते किसानों द्वारा आत्महत्याएँ, वस्तुतः सम्पूर्ण मराठवाडा की ग्रामीण जनता तबाही के कगार पर खड़ी है. बाज़ारों के टूटने, दुकानों के बंद होने व कामकाज की तलाश में अपरिहार्य स्थानांतरण, भोजन व जल के लिए तरसती ग्रामीण प्रजा का यह दृश्य विध्वंसकारी ग्रामीण सामाजिक अर्थव्यवस्था की भयावहता दर्शा रहा है. भारतीय जैन संघटना इस चुनौती का मात्र आपदा पीड़ितों को जल आपूर्ति द्वारा संतुष्ट नहीं है अपितु इस क्षेत्र के डेम, नदियों एवं नालों की जल संग्रहण क्षमता में स्थायी रूप से वृद्धि हेतु उन्हें गहरा करने की योजना पर कार्यरत है. गत लगभग 2 माह में सूखा प्रभावित जिल्हों में 4,45,000 लीटर जल प्रतिदिन आपदा पीड़ितों तक पहुंचाया गया है. साथ ही 10 नदियों को गहरा करने हेतु मशीनों द्वारा 760 घंटों की खुदाई अब तक की जा चुकी है.

## आत्महत्याग्रस्त किसानों के बच्चों का शैक्षणिक पुनर्वसन

गत शैक्षणिक वर्ष 15-16 में इस अभियान के तहत् भारतीय जैन संघटना के वाघोली, पुणे स्थित शैक्षणिक पुनर्वसन केंद्र में 277 बच्चों को मराठवाडा के सभी जिलें व यवतमाल जिल्हें से लाया गया था. वर्ष 16-17 के प्रारम्भ में महाराष्ट्र के उर्वरित सभी जिलों से बच्चों को पुणे लाने की समस्त व्यवस्थाएँ पूर्ण की जा रही हैं. इस अभियान में इन बालक - बालिकाओं के स्वास्थ्य, रहन-सहन एवं उनके मानसिक वृद्धि पर ध्यान देकर उन्हें ५वीं से १२वीं तक शिक्षण प्रदान कर उनका समुचित विकास करते हुए इन्हें स्वनिर्भर बनाया जाएगा ताकि आत्महत्या से प्रभावित इनके घरों में खुशहाली लायी जा सके.

## भारतीय जैन संघटना राजस्थान प्रगति के सौपन पर

भारतीय जैन संघटना राजस्थान ने राज्याध्यक्ष श्री संप्रति सिंघवी, जयपुर के नेतृत्व मे असाधारण प्रगति की है. दिनांक 9 मई, 16 को डूंगरपुर एवं श्री केशरियाजी मे भारतीय जैन संघटना के चेप्टर्स का शुभारंभ हुआ जिसमें श्री सिंघवी के अतिरिक्त श्री राकेश जैन एवं श्री निरंजन जुवाँ जैन उपस्थित रहे. एक वर्ष से कम की अवधि मे किशनगढ़, भीलवाड़ा, जयपुर, अजमेर, जोधपुर, उदयपुर, मालपुरा एवं राजसमंद मे चेप्टर्स का शुभारंभ निश्चित ही बी.जे.एस. राजस्थान के प्रभावी एवं कुशल नेतृत्व का परिचायक है. इसके अतिरिक्त युवती सक्षमीकरण, बदलोगे तो बढ़ोगे, अल्पसंख्यक लाभ कार्यशालें, युगल सक्षमीकरण कार्यक्रमों का आयोजन श्रंखलाबद्ध रूप से किया जा रहा है. बी.जे.एस. राजस्थान की यह प्रगति निश्चित ही प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय है.

## 18 माह की अवधि मे 100 कार्यशालाओं का आयोजन

भारतीय जैन संघटना संचालित व्यावसायिक सक्षमीकरण अभियान के राष्ट्रीय संयोजक व प्रभारी मेनेजमेंट गुरु श्री राकेश जैन, इंदौर ने 9 मई, 16 को श्री केशरियाजी (जिल्हा उदयपुर) राजस्थान मे **" बदलोगे तो बढ़ोगे "** की 100 वीं कार्यशाला का संचालन किया.

इन कार्यशालाओं का आयोजन देश के अधिकांश राज्यो में हुआ है. व्यावसायिक वैश्वीकरण के युग में व्यवसायियों को बदलाव हेतु जरूरी मंत्र एवं मार्गदर्शन देने का यह कार्यक्रम व्यावसायिक सक्षमीकरण अभियान के विविध कार्यक्रमों में से एक है.

# प्रतिभाएँ - जो हमारी प्रेरणा के स्रोत हैं

हमें इन पर गर्व है

## श्री शांतीलाल मुथ्था : संस्थापक - भारतीय जैन संघटना

कहा जाता है कि शहीद भगत सिंह एवं चंद्रशेखर आज़ाद की धमनियों में रक्त की जगह राष्ट्र प्रेम प्रवाहित होता था. सामाजिक उद्यमी श्री शांतीलाल मुथ्था एक ऐसा व्यक्तित्व, जिनकी धमनियों में बाल्यकाल से ही समाज व राष्ट्र प्रेम दोनों ही प्रवाहित हो रहे हैं. उन्हें प्राप्त प्रकृति-जन्य दूरदृष्टी की सौगात का ही परिणाम है कि आपने सामाजिक उद्यमिता की अनंत शक्तियों को पहचाना व सकारात्मक सामाजिक परिवर्तनों एवं रूपांतरणों का बीज बोया.

स्व-व्यक्तित्व, श्री मुथ्था ने जब भूमि-भवन का उनका व्यवसाय फलफूल रहा था, मात्र 31 वर्ष की आयु मे आत्मा की आवाज़ पर व्यवसाय को तिलांजली दी व बिनराजनीतिक, धर्मनिरपेक्ष्य एवं गैर-लाभांशी संस्था भारतीय जैन संघटना की 1985 मे स्थापना की जिसका उद्देश्य समाज विकास से राष्ट्र निर्माण मे सहभागिता करना है. श्री मुथ्था के नेतृत्व में भारतीय जैन संघटना ने गत 30 वर्षों में व्यापक धरातलीय सामाजिक सेवाओं के अतिरिक्त योग्य निर्णयों एवं योजना निर्माण की प्रक्रियाओं में सहभागिता की है. आपकी विशिष्ट त्रि-स्तरीय कार्यशैली में (1) देश की समस्याओं को समझना (2) सरकारी व्यवस्थाओं से दूर रहकर अनुसंधान आधारित समाधानों पर योजना निर्माण एवं (3) बिना किसी मूल्य के उन्हें समाज व सरकारों को प्रस्तुत करना है. आप समाज विकास, शैक्षिक गुणवत्ता सुधार, मूलवर्धित शिक्षा एवं आपदा प्रबंधन में व्यापकता से राष्ट्र स्तरीय कार्यक्रमों को नेतृत्व प्रदान करते हैं. आपके दिव्यदर्शी नेतृत्व में भारतीय जैन संघटना को उत्कृष्ट सेवाओं हेतु राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पुरूस्कारों से नवाजा जा चुका है.

सामाजिक क्षेत्र में प्रदत्त सेवाओं के फलस्वरूप आपको सामूहिक विवाह के प्रणेता व समाज सुधारक के रूप में मान्यता प्राप्त हुई है. आपमें विद्यमान गहरी विचार शक्ति एवं दूरदृष्टी के बल पर समाज में व्याप्त समस्याओं के अतिरिक्त भविष्य में उदभवित होने वाली समस्याओं को आपने समाज के समक्ष प्रस्तुत ही नहीं किया अपितु उनके समाधानों की योजनाएं जैसे युवती सक्षमीकरण, सामूहिक विवाह, परिचय सम्मलेन, प्लास्टिक शल्यचिकित्सा आदि समय समय पर प्रस्तुत की हैं.

सामाजिक वैज्ञानिक श्री मुथ्था अनुसंधान आधारित अध्ययनों एवं समाधानों के हिमायती हैं जो आपकी 30 वर्षों की लम्बी सामाजिक यात्रा में सदैव ही परिलक्षित होती रही है. 1993 में लातूर-उस्मानाबाद (महाराष्ट्र) में आये प्रलयकारी भूकंप के समय आपने संपूर्ण शक्ति से कार्य किया. प्राकृतिक आपदाओं में भारतीय जैन संघटना की सेवाओं की सराहना ही नहीं हुई अपितु केंद्र व राज्य सरकारों ने राहत संचालनों हेतु अनुबंधित भी किया है.

श्री मुथ्था ने आपदा प्रभावित हजारों बच्चों के जीवन को प्रकाशित किया. 1993 में लातूर भूकंप में अनाथ हुए 1200 बच्चों को आप पुणे लेकर आये व पुणे के वाघोली क्षेत्र में शैक्षणिक पुनर्वसन केंद्र प्रारम्भ किया जो आपकी गहरी सामाजिक वैचारिकी का द्योतक है. आपका मानना है कि आपदा प्रभावित बच्चों का शैक्षणिक पुनर्वसन ही वह कुंजी है जिससे उन्हें भावनात्मक ज़्यादतियों का शिकार व गुमराह होने से बचा कर अपराधों की दुनिया से दूर रखा जा सकता है. अकाल से जूझ रहे महाराष्ट्र के भूमि पुत्रों द्वारा की गयी आत्महत्याओं के फलस्वरूप उनके बच्चों के अनिश्चित भविष्य को संवारने का निर्णय लेकर सरकार एवं परिवारों की अनुमति से 300 बच्चों को गोद लिया व उन्हें शिक्षा-दीक्षा हेतु पुणे लाया गया जहां उनकी पोषण एवं स्वास्थ्य संबंधी आवश्यकताओं पर ध्यान रखा जाता है.

श्री मुथ्था कुशल शिक्षाविद हैं व वर्ष 2002 से आपने आपकी सम्पूर्ण शक्ति को शिक्षा के क्षेत्र में झोक दिया है. 1985 से लेकर 2002 तक के आपके व्यापक सामाजिक सुधार व आपदा प्रबंधन के अनुभवों के आधार पर आपका दृढ़ मत बना कि सामाजिक अव्यवस्थाओं के विरुद्ध समाज को जागृत व सक्षम करने हेतु एक मात्र रामबाण इलाज शिक्षा ही है. अतः आपने स्कूली शिक्षा की गुणवत्ता उन्नति को प्राथमिकता दी जो आपकी शैक्षणिक पहल का प्रधान बिन्दु है. आपके नेतृत्व में भा.जै.सा. ने विविध शैक्षणिक कार्यक्रमों का निर्माण एवं क्रियान्वयन देश के 4000 स्कूलों में किया. श्री मुथ्था ने हाल ही में शांतीलाल मुथ्था फाउंडेशन (SMF) स्थापित किया है जो मूल्य वर्धित शिक्षा पर अनुसंधान आधारित प्रयोगात्मक परियोजना पर कार्यरत है ओर देश को ही नहीं अपितु समस्त विश्व को मूल्य वर्धन पाठ्यक्रम की अनुपम भेंट देकर आदर्श एवं चरित्रवान पीढी के निर्माण में उनकी गहरी वैचारिक संकल्पना को यथार्थ रूप देने हेतु कृत-संकल्पित हैं. वर्ष 2015 मे महाराष्ट्र सरकार ने SMF से राज्य के 34 जिल्हों के 600 स्कूलों में मूल्यवर्धित शिक्षण देने हेतु करार किया है.

श्री मुथ्था की सेवाओं की सराहना ही नहीं हुई अपितु चारों दिशाओं से मान्यता प्राप्त हुई है. आपको 1992 में National Institute of Youth Affairs द्वारा National Youth Award, 1990 में श्री टी.एन.सेशन के करकमलों से 'Yuva Pune Gaurav Puraskar', 2005 में 'World Association of NGO (WANGO)' Award व विविध प्रख्यात संस्थाओं से अनेक 'Lifetime Achievement Award' प्राप्त हुए हैं.

श्री मुथ्था देश के समाजशास्त्रियों की प्रथम पंक्ति में स्थान रखते हैं. विनम्र, मिलनसार, मृदुभाशी, सिद्धान्तप्रिय, विचारक एवं समाज सुधारक श्री मुथ्था सामाजिक क्रांति के हस्ताक्षर हैं, जिन पर हम सभी को गर्व है.

युवा प्रतिभा : **श्री मोहम्मद युनूस,** चेन्नई

### 2100 बाढ़ पीड़ितों का आश्रय प्रदाता

श्री मोहम्मद युनूस ने चेन्नई में 2015 में आई विनाशकारी बाढ़ में 2100 लोगों की जान की रक्षा की.सड़क के किनारे बैठी एक माता उसके नवजात शिशु को पोषण प्रदान कर रही थी. यह दृश्य देखकर श्री युनूस का हृदय परिवर्तन हुआ व उन्होनें बाढ़ पीड़ितों को स्वयं के घर में आश्रय दिया. यह तो युनूस के मानवीय अभियान का प्रारम्भ मात्र था. श्री युनूस ने यह यात्रा तीन मित्रों के साथ प्रारम्भ की, किन्तु लोग जुड़ते गए व कारवां बनता गया. श्री युनूस ने सोश्यल मीडिया का श्रेष्ठ उपयोग कर स्वयं के फोन नंबर सभी चेन्नई वासियों को प्रेषित किए, फलस्वरूप उन्हें एक ही दिन में सहायता हेतु 6000 से अधिक फोन कॉल्स प्राप्त हुई. बाढ़ पीड़ितों में एक सगर्भा भी थी जिसको श्री युनूस ने समय पर सहायता प्रदान की. इस महिला ने उसके नवजात शिशु का नाम "युनूस" रखा है. आपदा एवं विनाश की इस घड़ी में, श्री युनूस ने बाढ़ पीड़ितों की सहायता कर असीम प्रसन्नता का अनुभव किया.रिपोर्टों के अनुसार श्री युनूस ने 17 नवंबर को 1500 बाढ़ पीड़ितों को सहायता कर उन्हें जीवनदान दिया व रहने को आश्रय प्रदान किया.
2 दिसंबर को जब चेन्नई शहर बाढ़ के पानी में डूबा हुआ था, 600 बाढ़ पीड़ितों को बचाया. व्यवसायी श्री युनूस ने चेन्नई बाढ़ आपदा के पश्चात् श्रेष्ठ मानवी के रूप में जन्म लिया. व्यावसायिक तौर पर श्री मोहम्मद युनूस PROPO के सह संस्थापक हैं जो e-Commerce कंपनी है. वह एक ऐसी Application विकसित करना चाहते हैं जिसमें वे युवाओं को उद्यमिता, राजनीति व सुधारात्मक मुद्दों पर सक्षम कर सके. तमिलनाडू राज्य सरकार ने शौर्यता, स्वार्थरहित महान मानवीय सेवाओं हेतु श्री मोहम्मद युनूस को **"अन्ना मेडल फॉर गलेन्ट्री"** अवार्ड से चेन्नई में 67 वें गणतन्त्र दिवस पर सम्मानित किया.

## जैन समाज के साथ हो रहे अन्याय हेतु भारतीय जैन संघटना, कर्नाटक ने सरकार को दिया ज्ञापन

गत अनेक वर्षों से कर्नाटक राज्य सरकार ने जैन समुदाय के दिगंबर पंथ को अल्पसंख्यक दर्जा दिया हुआ है, जिसके कारण राज्य के जैन समुदाय का श्वेतांबर पंथ अल्पसंख्यता के लाभों से वंचित है. गत कुछ वर्षों मे जैन समुदाय द्वारा इस भेदभावपूर्ण नीति पर राज्य सरकार का ध्यान आकर्षित करने के प्रयास अविरत रूप से होते रहे हैं, किन्तु आश्वासनों के उपरांत भी राज्य सरकार ने इस विषय मे आवश्यक आदेश जारी नहीं किए हैं.

दिनांक 2 मई, 16 को कर्नाटक राज्य सरकार द्वारा अल्पसंख्यक समुदायों हेतु बेंगलोर में आयोजित सभा मे भारतीय जैन संघटना, कर्नाटक द्वारा राज्य के अल्पसंख्यक मंत्री डा. कमरूल इस्लाम, राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग, नई दिल्ली के अध्यक्ष श्री नजीम अहमद एवं कर्नाटक अल्पसंख्यक आयोग की अध्यक्षा श्रीमती बलक़ीस बानु को कर्नाटक राज्य मे जैन समुदाय के श्वेतांबर पंथ को अल्पसंख्यक लाभ सुलभ कराने हेतु ज्ञापन दिया गया. भारतीय जैन संघटना कर्नाटक के सर्वश्री राजेश बांथिया, उत्तमचंद बांथिया, अशोक श्री श्रीमल, प्रकाश जैन एवं महेंद्र कोठारी आदि ने ज्ञापन देकर चर्चा मे भाग लिया. राज्य सरकार व राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग ने इस संबंध मे आवश्यक आदेश जारी करने का आश्वासन दिया.

## भारतीय जैन संघटना द्वारा अल्पसंख्यक लाभों पर नवीन पुस्तक का प्रकाशन शीघ्र

अल्पसंख्यको को मिलने वाले विभिन्न लाभों एवं लाभों की योजनाओं पर पुस्तकों का प्रकाशन मार्च 2014 मे किया गया था. समाजजन की भारी मांग के फलस्वरूप इन आवृत्तियों का पुनः प्रकाशन किया जाता रहा है किन्तु गत वर्षों में नवीन योजनाओं के प्रारम्भ होने व अनेक योजनाओं मे तथा नियमों मे परिवर्तनों के कारण अल्पसंख्यक लाभों पर पुस्तक के पुनः लेखन एवं प्रकाशन का निर्णय लिया गया. प्रस्तावित नवीन पुस्तक सभी अल्पसंख्यक समुदायों हेतु जुलाई मास मे उपलब्ध कराये जाने की संभावना है.

## 'हमारी धरोहर' अल्पसंख्यक समुदायों की समृद्ध विरासत के संरक्षण की योजना

अल्पसंख्यक मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा इस योजना का शुभारंभ वर्ष 2014-15 से किया गया. इस योजना के व योजना से लाभान्वित होने हेतु पूर्ण की जाने वाली प्रक्रियाओं के असपष्ट विवरण के संबंध मे भारतीय जैन संघटना ने मंत्रालय को पत्र लिखकर योजना को पारदर्शक पद्धति से वेब-साईट पर रखने हेतु प्रार्थना की थी. अब मंत्रालय द्वारा अल्पसंख्यक समुदायों से सम्बद्ध संगठनों की इस योजना के तहत पात्रता आदि के स्पष्ट विवरण उल्लेखित किए गए हैं. साथ ही योजना के तहत M.Phil. व Phd. कर रहे विध्यार्थियों को फेलोशिप प्रदान करने के नियमों का उल्लेख अब स्पष्टरूप से मंत्रालय की वेब-साईट पर उपलब्ध है.

## अल्पसंख्यक समुदायों के हित मे राज्य सरकारों से मांग करना आवश्यक

अल्पसंख्यक समुदायों के हितों का रक्षण करना राज्य सरकारों का उत्तरदायित्व है. इस हेतु राज्य सरकारों द्वारा उनके राज्य मे अल्पसंख्यक आयोग की स्थापना का प्रावधान है. किन्तु अरुणाचल प्रदेश, गोवा, गुजरात, हरयाणा, हिमाचल प्रदेश, मेघालय, मिज़ोरम, नागालेण्ड, उड़ीसा, सिक्किम व संघ राज्य अदमान निकोबार, चंडीगढ़, दमन एवं दीव, दादरा नागर हवेली, लक्षदीप व पांडुचेरी ने अभी तक अल्पसंख्यक आयोग स्थापित नहीं किए हैं. इन राज्यों व संघ राज्य क्षेत्रों मे अल्पसंख्यक आयोगों की स्थापना हेतु सभी सल्पसंख्यक समुदायों के संयुक्त प्रयास करने की आवश्यकता है.

## राज्य सरकारों ने दिया जैन समुदाय को अल्पसंख्यक दर्जा

गुजरात राज्य सरकार ने गुजरात के जैन समुदाय हेतु प्रतीक्षित धार्मिक अल्पसंख्यक दर्जा आदेश क्रमांक 102014-97-ए.1 दिनांक 7 मई 16 द्वारा प्रदान कर दिया है. ज्ञातव्य रहे की गुजरात का जैन समुदाय इस हेतु दो वर्षों से राज्य सरकार से मांग कर रहा था.

आंध्र प्रदेश के विभाजन के पश्चात तेलंगना राज्य की स्थापना के फलस्वरूप, राज्य सरकार ने मई माह मे जैन समुदाय को धार्मिक अल्पसंख्यक दर्जा प्रदान कर दिया है.

अब तक कुल 17 राज्यो ने जैन समुदाय को धार्मिक अल्पसंख्यक दर्जा प्रदान किया है.

# Book your dates & Plan your travel

## BJS National Convention 2016 @ Chennai

**5-6 Nov. 2016**

- National & International Speakers
- Jain leaders from various countries
- Keynote addresses by subject experts

*With Best Complements From*

**BJS Tamil Nadu**

Ghyanchand Achaliya
Sudhir Surana
Rajendra Lunker
Rajendra Duggad
Lalit Bokadiya
Mahaveer Parmar

*With Best Complements From*

**BJS Karnataka**

Omprakash Lunawat
Gautam Bafna
Dinesh Palrecha
Jayantilal Dhanecha
Mukesh Hinger



RNI No.-MAHBIL/2016/66409

PR No. PCE / 089 / 2016-2018
Published on 10/06/2016 & Posted at
P. S. O., M. Yard, Pune- 411037, On 10/06/2016


To,

From:


BJS
Bharatiya Jain Sanghatana

Level IV, Muttha Towers, Loop Road,
Near Don Bosco Church, Yerawada, Pune 411006
Tel. : 020 4120 0600, 4128 0011, 4128 0012
Website : www.bjsindia.org E mail : info@bjsindia.org Facebook : www.facebook.com/BJSIndiacommunity Tweeter: BJS_India



मुद्रक तथा प्रकाशक – प्रफुल्ल पारख द्वारा भारतीय जैन संघटना के लिये प्रभात प्रिंटिंग वर्क्स, ४२७, गुलटेकड़ी, पुणे – ४११०३७ से मुद्रित तथा मुथ्था टावर, लूप रोड, नियर डॉन वास्को चर्च, येरवडा, पुणे – ४११००६ से प्रकाशित. सम्पादक – प्रफुल्ल पारख, फ़ोन – (०२०) ४१२००६००

Rs. 10/- Life Subscription